॥ हयग्रीवस्तुतिः ॥

ओं ॥ लसदास्य हयग्रीव लसदोष्ठद्वयारुण । लसद्दंतावलीशोभ हयग्रीव लसत्स्मित ॥ १ ॥

लसत्फाल हयग्रीव लसत्कुंतलमस्तक । लसत्कर्ण हयग्रीव लसन्नयनपंकज ॥ २ ॥

लसद्वीक्ष हयग्रीव लसद्भूमंडलद्वय । लसद्ग्रीव हयग्रीव लसद्धस्त लसद्भुज ॥ ३ ॥

लसत्पार्श्व लसत्पृष्ठ कक्षांसयुग सुंदर । हयग्रीव लसद्वक्षःस्तनमध्य वलित्रय ॥ ४ ॥

हयग्रीव लसत्कुक्षे लसद्रोमलतांचित । हयग्रीव लसन्नाभे लसत्कटियुगांतर ॥ ५ ॥

लसदूरो हयग्रीव लसज्जानुयुगप्रभ । हयग्रीव लसज्जंघायुग्म पादांबुजद्वय ॥ ६ ॥

हयग्रीव लसत्पादतलरेखारुणद्युते । लसन्नखांगुलीशोभ हयग्रीवातिसुंदर ॥ ७ ॥

लसत्किरीटकेयूरकंकणांगदकुंडल । हयग्रीव लसद्रत्नहारकौस्तुभमंडन ॥ ८ ॥

हयग्रीव लसन्मध्य लसच्चंदनचर्चित । लसद्रत्नमयाकल्प श्रीवत्सकृतभूषण ॥ ९ ॥

हयग्रीव लसत्कांचीरत्निकंकिणिमेखल । हयग्रीव लसद्वस्त्र मणिनूपुरमंडित ॥ १० ॥ हयग्रीवेंदुबिंबस्थ लसच्छंखाक्षपुस्तक । लसन्मुद्र हयग्रीव लसदिंदुसमद्युते ॥ ११ ॥

हयग्रीव रमाहस्तरत्नकुं भस्मृतामृत । हयग्रीव समानश्रीचतूरूपोपसेवित ॥ १२ ॥

हयग्रीव सुरश्रेष्ठ हयग्रीव सुरप्रिय । हयग्रीव सुराराध्य जय शिष्ट जयेष्टद ॥ १३ ॥

हयग्रीव महावीर्य हयग्रीव महाबल । हयग्रीव महाधैर्य जय दुष्टविनष्टिद ॥ १४ ॥

भयं मृत्युं क्षयं व्यर्थव्ययं नानामयं च मे । हरे संहर दैत्यारे हरे नरहरे यथा ॥ १५ ॥

भिक्तें शिक्तें विरिक्तें च भिक्तें मुक्तिं च युक्तिद। हरे मे देहि दैत्यारे हरे नरहरे यथा॥ १६॥

सदा सर्वेष्टलाभाय सर्वानिष्टनिवृत्तये । हयग्रीवस्तुतिः पाद्या वादिराजयतीरिता ॥ १७ ॥

चिंतामणिर्हयग्रीवो वशे यस्य निषेवितः । सोऽपि सर्वार्थदो नृणां किमुतासौ हयाननः ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीमद्वादिराजपूज्यचरणविरचितं हयग्रीवस्तुतिः संपूर्णं ॥